मार्च 2025
अंक 4

अंतरदेश

सरहदों के पार हिंदी का संसार

विश्व सिनेमा विशेषांक

अंतरदेश

सरहदों के पार हिंदी का संसार

विश्व सिनेमा विशेषांक

मार्च 2025

संपादक

हंसा दीप

यूनिवर्सिटी ऑफ टोरंटो, कनाडा

सहायक संपादक

वेदप्रकाश सिंह

ओसाका विश्वविद्यालय, जापान

परामर्श मंडल:

अडेलै हेनिश-टेम्बे, लाइप्त्सिग विश्वविद्यालय, जर्मनी

आनंद वर्धन शर्मा, बनारस हिंदू विश्वविद्यालय, वाराणसी

एरिका करांति, तूरीन विश्वविद्यालय, इटली

दिव्यराज अमिय, त्युबिंगन विश्वविद्यालय, जर्मनी और ज़्यूरिख विश्वविद्यालय स्विट्जरलैंड

राम प्रसाद भट्ट, हैम्बर्ग विश्वविद्यालय, जर्मनी

ली यालान, बीजिंग फ़ॉरन स्टडीज़ यूनिवर्सिटी, चीन

शिव कुमार सिंह, लिस्बन विश्वविद्यालय, पुर्तगाल

स्थायी संपर्क पता:

नॉटनल, स्वत्वाधिकार © 2024

16/1454, इंदिरा नगर, लखनऊ- 226016, उत्तर प्रदेश, भारत

antardesh.patrika@gmail.com

अंतरदेश से जुड़े क़ानूनी विवाद लखनऊ उच्च न्यायालय के अधिकार क्षेत्र में आएँगे। मौखिक और लिखित रचनाओं और कृतियों में व्यक्त विचार रचनाकारों के निजी विचार हैं, नॉटनल, संपादक और संपादक मंडल के नहीं।

चित्र गूगल से साभार

अनुक्रम

संपादकीय **4**

नोबेल पुरस्कृत रचनाकार और फ़िल्म **8**

विजय शर्मा

न्यूज़ीलैंड में हिंदी सिनेमा और संगीत की छटा **22**

रोहित कुमार “हैप्पी”

राष्ट्रीय-सांस्कृतिक जागरण के गीतकार: कवि प्रदीप **31**

बी.एल. आच्छा

फ़िल्म गीतकार प्रदीप जी से बी.एल. आच्छा की आत्मीय बातचीत **41**

ऑस्ट्रेलियन सिनेमा - कल से आज तक **49**

रेखा राजवंशी

नई सदी का हिंदी सिनेमा: परंपरा, प्रयोग और संभावनाएँ **61**

राजेश कुमार सिन्हा

बेशरम रंग **67**

धर्मपाल महेंद्र जैन

अभिमान **72**

उषा किरण

1971 - अच्छा सिनेमा और साहित्य कभी बासी नहीं होता **80**

दिलीप कुमार

भारतीय सिनेमा का इतिहास **89**

वंदना सहाय

चीन में सिनेमा : भारत के साथ एक सांस्कृतिक पुल और "न चा (哪吒)" का उदय **104**

विकास कुमार सिंह

जापानी एनीमेशन स्टूडियो जिबली की फिल्में **112**

वेदप्रकाश सिंह

हिंदी छात्र परिशिष्ट **117**

भारतीय बौद्ध ग्रन्थों से चीन की स्क्रीन तक: एक अविभाज्य बंधन **117**

वाँग शीन युवान

“नेचा २” की सफलता के पीछे: प्रतिभा - चीन की एनीमेशन फ़िल्म उद्योग की महत्वपूर्ण शक्ति **123**

यु ज्या शुवान

एक पत्र **134**

आर्नो दोहमन

धैर्य **137**

जोस्सिका ब्योलमन

सूर्य की दो कथाएँ – जर्मन डरावनी मूक फ़िल्म नोस्फ़ेरातु और जॉर्जियाई अतियथार्थवादी चित्र जाग्रत का सूर्य **139**

एगोर शपूरोव

संपादकीय

सिनेमाई दिनों में जी रहे हम

अंतरदेश का विश्व सिनेमा विशेषांक आपके हाथों में सौंपते हुए मुझे बेहद खुशी है। सिनेमा, मनोरंजन की एक ऐसी विधा है जो सर्वाधिक लोकप्रिय है, सर्वग्राह्य है, सर्वमान्य है। हर भाषा और संस्कृति को अपनी आने वाली पीढ़ी को सौंपने की महत्वपूर्ण भूमिका अगर किसी ने शत-प्रतिशत निबाही है, तो वह सिनेमा ही है। सामाजिक-सांस्कृतिक सिंहावलोकन के साथ ही इतिहास को भी वर्तमान पीढ़ी तक पहुँचाने का महत कार्य करने की जिम्मेदारी सिनेमा ने अपने कंधों पर ली है।

न केवल एक विधा के रूप में बल्कि इसमें काम करने वाले, संगीत देने वाले, अवार्ड जीतने वाले, किसी भी रूप में इससे जुड़े, हर देश के अपने हीरो हैं। हर मुल्क का बाशिंदा अपने-अपने हीरो को सिर का ताज बना कर सजाकर रखता है। ऐसा हो भी क्यों न, कहानी से लेकर, पग-पग पर निर्देशकों की कड़ी मेहनत, सूझबूझ और दूरदर्शिता ने सिनेमा को आज सर्वोच्च ऊँचाइयों तक पहुँचा दिया है। हर भाषा के सिनेमा उद्योग ने उत्तरोत्तर प्रगति की है। आधुनिक तकनीक के प्रयोग से इसके मापदंड लगातार विस्तार ले रहे हैं। मनमोहक एवं रोमांचक दृश्यों की अधिकता से, ओटीटी

की सुविधा से, दर्शक अपने ड्राइंग रूम में बैठकर हर तरह की फिल्म का आनंद ले रहे हैं।

साहित्य हो या इतिहास, बड़े परदे के माध्यम से जन-जन तक पहुँचता है। इतिहास के सुसभ्य और दरिंदे शासक अपने तमाम सुकृत्यों और कुकृत्यों के साथ सिनेमा के परदे पर आते हैं तो इतिहास का साक्षात दर्शन आम जनता को होता है। हालाँकि इतिहास पर लिखी किताबें हैं, शिलालेख भी हैं, लेकिन देखने वालों की तुलना में पढ़ने वालों की संख्या बहुत कम है। हिंदी सिनेमा में सिकंदर, मुगल-ए-आजम, रजिया सुल्तान, गांधी, भगतसिंह, जोधा अकबर, बाजीराव मस्तानी, पद्मावत, झाँसी की रानी, तानाजी जैसी फ़िल्मों ने उन महावीरों की गाथाओं को नए आयाम दिए हैं। इन फ़िल्मों ने घर-घर की देहरी पर पहुँचकर उन असली किरदारों के शौर्य, देश भक्ति और समर्पण को हर देहरी के पार आने वाली पीढ़ी तक पहुँचाया है।

और फिर आज, वर्तमान परिप्रेक्ष्य में, आसपास ही इतना कुछ घटित हो रहा है। एक बार फिर से दुनिया विश्वयुद्ध के कगार पर खड़ी है। सामाजिक विसंगतियाँ निरंतर मानवीय मूल्यों का ह्रास कर रही हैं। तोप और टैंक बसी-बसायी बस्तियों को राख के ढेर में तबदील कर रहे हैं। आततायी शासक का अहं, अन्य देशों को मलबे के ढेर में बदलने में देर नहीं करता। पिछले कुछ वर्षों में, हमारे देखते-देखते कई देश अपना दम तोड़ चुके हैं और कई लड़ते-लड़ते उस बिन्दु पर पहुँचते दिखाई दे रहे हैं, जहाँ उनका